>

Title: Alleged incident of disrespect shown towards national emblem in JNU campus, Delhi.

**श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज):** सभापति महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने एक अत्यन्त लोक महत्व के सुनिश्चित प्रश्न पर मुझे बोलने की अनुमति दी है।

आज जहां हम प्रजातंत्र और प्रजातांत्रिक मूल्यों की हिफाजत के लिए रोज़ इस सदन में और इस सदन के बाहर भी अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं, वहीं आज कुछ कुंठित मानसिकता के लोग उन भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों पर कुठाराघात कर रहे हैं। प्रजातंत्र में जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, उसकी जगह पर जिस प्रकार की स्वेच्छाचारिता हो रही है, ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न की तरफ मैं पूरे सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू। निश्चित तौर से राजनीति में विचारों की भिन्नता हो सकती है, लेकिन कम से कम जो राष्ट्रीय महत्व की चीजें हैं, चाहे वह भारतीय राष्ट्रीय चिन्ह अशोक का स्तम्भ हो या राष्ट्रीय गीत हो, वह किसी मुल्क की अस्मिता और स्वाभिमान का प्रतीक होता है।

एक जे.एन.यू. फोरम अगेन्स्ट वार ऑन पीपुल संस्था है। पांच मार्च को जे.एन.यू. कैम्पस में उन्होंने एक ऑपरेशन ग्रीन हंट की एक वर्कशॉप रखी थी, जिसमें एक लेखिका अरुंधति को बुलाया था और उस वक्तव्य के लिए, उस वर्कशॉप के लिए पूरे जे.एन.यू. में या आसपास के कैम्पस में जो पर्चे बांटे गये, आपने भी देखा होगा और आप भी अवगत हुए होंगे, बड़ा दुर्भाग्य है कि उस पर्चे में, जिसमें लोगों का आह्वान किया गया, लोगों को आमंत्रित करने के लिए कहा गया, उस पर्चे पर जूते की तस्वीर बनाई गई और उस तस्वीर के बीच में अशोक का स्तम्भ, जो हमारे इस सदन के अन्दर भी है, वह अशोक का स्तम्भ एक भारत की अस्मिता की पहचान है, उस पर वह प्रदर्शित किया गया।

इस सम्बन्ध में लोग वहां के वाइस चांसलर प्रो. एस.के. सोपोरी से मिले, डीन, स्टूडेंट वैलफेयर से मिले। इस मामले की गम्भीरता को वी.सी. या जो हमारे डीन, स्टूडेंट वैलफेयर हैं, उन्होंने सब ने महसूस किया, लेकिन इसके बावजूद भी अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

आजकल कुछ लोगों का एक फैशन सा बन गया है, जो कभी भारत माता को डायन कह देंगे, कभी राष्ट्रीय ध्वज का, तिरंगे का अपमान करने की बात कह देंगे।

कभी राष्ट्रगीत के संबंध में कुछ कह देंगे या कभी कह देंगे कि कश्मीर भारत का अंग नहीं है। मैं समझता हूं कि किसी भी मुल्क में इस तरह की घटनाएं जो राष्ट्र की अस्मिता पर कुठाराघात करती हों, जो सत्यमेव जयते के मूल्यों के प्रतिकूल या प्रतिगामी हों, वह देशद्रोह की श्रेणी में आना चाहिए, क्योंकि हम लोग यहां लोकतंत्र में बैठे हैं और लोकतंत्र के पुजारी हैं। आज केवल यह बात नहीं है कि लोकतंत्र कमजोर हो रहा है। मैं समझता हूं कि भारत की धरती पर रहकर, कोई भारत के सम्मान को ठेस पहुंचाने का प्रयास कर रहा है और सार्वजनिक रूप से कर रहा है। सत्ता की, सरकार की, हमारी या किसी भी दल की आलोचना कोई इस लोकतंत्र में कर सकता है, लेकिन जिस तरह से डेमोक्रेसी में आटोक्रेसी हो रही है, मैं समझता हूं कि इस सदन को बहुत गंभीरता से इस प्रश्न को लेना चाहिए। मैं सरकार से कहूंगा कि यदि देश की राजधानी के उस जेएनयू कैंपस में जहां बड़े जीनियस लोग पढ़ते हों, जहां इंटैलेक्चुअल्स पढ़ते हों, वहां से हम दुनिया को क्या संदेश दे रहे हैं और कौन से मूल्यों को प्रतिपादित करने की बात कर रहे हैं? निश्चित तौर पर इस मामले की गंभीरता को संज्ञान में लेकर, संसदीय कार्यमंत्री जी अगर इस पर रिस्पांड कर सकें, तो करें। धन्यवाद।